कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान

सुलतानपुर उ0प्र0 228118

एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय बेब–संगोष्ठी

वेब–संगोष्ठी सजीव प्रसारण जूम ऐप के माध्यम से

–: विचार विषय :–

वैश्विक महामारी कोरोना के सन्दर्भ में साहित्य और समाज की भूमिका

जून 06, 2020 – दिन शनिवार

समय– प्रातः 10:00am से 01.30pm तक

आयोजक

हिन्दी विभाग

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान सुलतानपुर

वेबसाइटः http://www.knipss.ac.in ईमेलः kni.webinarhindi@gmail.com

मोबाइल नंबरः 9415797330, 9580968434, 9415961500

सम्बद्ध– डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

निःशुल्क पंजीकरण – वेबिनार पंजीकरण लिंक www.knipss.ac.in/webinar/webinar.asp

वेब–संगोष्ठी अभिमत

वर्तमान समय में समूचा विश्व एक भीषण चुनौती का सामना कर रहा है, जो कोविड–19 अर्थात् कोरोना महामारी के रूप में हमारे समक्ष एक विकराल स्वरूप में उपस्थित है। इस कोरोना संक्रमण की विकरालता व भयावहता को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 15 मार्च 2020 को इसे वैश्विक महामारी के रूप में घोषित किया है। अभी भी विश्व के अधिकाश राष्ट्र में इसका कहर जारी है। इक्कीसवीं सदी की इस गंभीर त्रासदी के, वैश्विक परिप्रेक्ष्य मे इस नकारात्मकता का सामना करने के लिए साहित्य अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वाह कर सकता है। इस संभावना से कदापि इन्कार नही किया जा सकता। साहित्य न केवल हमें वैचारिक रूप से सशक्त व समृद्ध बनाता है बल्कि मन के पर्यावरण को शुद्ध व स्वच्छ भी करता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में कहें तो– ''साहित्य मंगल का विधाता है। इसलिए उसकी भूमिका पृथक व सार्थक है। साहित्य की अनेक विधाओं के माध्यम् से **''तमसो मा ज्योतिर्गमय''** की अवधारणा को अपनाते हुए एक सकारात्मक पहल की जा सकती है, जो मानव समाज के लिए एवं समग्र सृष्टि के लिए कल्याणकारी हो सकती है, क्योकि साहित्य की अपनी प्रकृति संवेदनशीलता की भी होती है।'' विशेषज्ञों का मानना है कि कोरोना सबकी जिन्दगी बदलने वाला है। यह परिवर्तन समाज व साहित्य की दुनियां में भी दिख रहा है। वस्तुतः साहित्य का संसार मूलरूप से लेखकों, प्रकाशकों एवं पाठकों से मिलकर बनता है। अब कोरोना वायरस इस दुनिया में खलबली मचा रहा है, इसे देखना दिलचस्प होगा।

इसी पहलू को ध्यान में रखते हुए कमला नेहरू संस्थान द्वारा ''वैश्विक महामारी कोरोना के सन्दर्भ में साहित्य और समाज की भूमिका'' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय बेब–संगोष्ठी आयोजित करने का यह उपक्रम है, जो मानव कल्याण की दिशा में सार्थक सिद्ध होगा, ऐसी उम्मीद है। आशा है कि विद्वान वक्ताओं के वक्तव्य के माध्यम से विभिन्न विषयों के विषय विशेषज्ञ, प्रतिभागी गण, शोधार्थी एवं छात्र विभिन्न नतीजों पर पहुच सकेंगे।

उपविषय

1. कोरोना महामारी – बाजार और समाज का नया संकट।
2. ग्रामीण भारत पर कोविड–19 का प्रभाव और एक गंभीर सामाजिक चिन्तन ।
3. कोरोना संकट की घडी में – साहित्य की भूमिका।
4. कोविड–19 –मूल्यपरम्परा, संस्कृति और सामाजिक सरोकार पर एक नव्य संकट ।
5. कोरोना संक्रमण का संकट और नारी की भूमिका ।
6. कोरोना काल की सामाजिक और साहित्यिक चुनौतियां ।
7. कोरोना त्रासदी –सामाजिक सम्वेदना का बदलता स्वरूप।
8. साहित्य और समाज पर कोरोना का प्रभाव ।

आवश्यक सूचनाएं

1. इच्छुक छात्र/शोधार्थी/बुद्धिजीवी सम्बन्धित विषय पर शोध सारांश तथा शोध आलेख दिनांक 05.06.2020 तक अनिवार्य रूप से निर्दिष्ट ईमेल पर भेजना सुनिश्चित करें।
2. शोध सारांश (अधिकतम 250 शब्दों) तथा मौलिक शोध आलेख (अधिकतम 3000 शब्दों) Ms Word Kurti Dev 10 में टाइप कर भेजें, पी0डी0एफ0 फाइल ही स्वीकार्य होगी। शोध आलेख के अन्त में विशेष टिप्पणी व सन्दर्भ ग्रथों का समुचित उल्लेख होना चाहिए। शोध आलेख पर अपना मो0नं0, व्हाट्सएप्प नं0, ईमेल, एवं सम्पूर्ण पता (पिन सहित) अवश्य लिखे।
3. चुने गए आलेखो को ISBN पुस्तक में रूप में यथासमय प्रकाशित किया जाएगा। इस सन्दर्भ में अन्तिम निर्णय विभाग का रहेगा।
4. पूर्णतः निःशुल्क यह वेबिनार जूमएप्प पर सम्पन्न होगा।
5. पंजीकृत प्रतिभागियों को कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी उनके पंजीकृत इमेल पर प्रदान की जाएगी। संगोष्ठी में प्रतिभागिता के लिए मीटिंग ज्वांइन करने का लिंक आई–डी और पासवर्ड संगोष्ठी के पूर्व आपके पंजीकृत ईमेल पर भेजा जाएगा ताकि आप कनेक्ट हो सके।
6. वेबिनार में सहभागिता करने वाले सभी सम्मानित प्रतिभागी सदस्यों को वेबिनार के समापन तक जुडे रहने और फीडबैक फार्म पूरित करने पर निःशुल्क ई–प्रमाणपत्र पंजीकृत ईमेल पर एक सप्ताह के अन्दर प्रेषित कर दिया जाएगा।

महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान का परिसर ऐतिहासिक नगर सुलतानपुर में आदिगंगा गोमती की गोद में ऐसी जगह स्थित है, जहां गोमती नदी अर्धचन्द्रकार होकर पूर्व दिशा की ओर मुड़ जाती है। संस्थान अपने संस्थापक श्री केदार नाथ सिंह के सपनों का साकार और जीवन्त सरस्वती मन्दिर है। जिसने पिछले 48 वर्षो से अपनी अनवरत एवं उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करते हुए समाज व राष्ट्र की सेवा में अद्यतन संलग्न है। श्री केदार नाथ सिंह जी ने इसे पूर्वांचल की गरीबी, अज्ञानता और पिछडेपन को दूर करने के लिए कला एंव ज्ञानविज्ञान के दीपक के रूप में प्रज्जवलित किया, जो संस्थान के रूप में जन–जन को आलोकित कर रहा है।

संस्थान अपनी संख्यात्मक और गुणात्मक प्रतिभा के विकास से शिक्षा जगत में विशाल वट वृक्ष बन गया। इस विशाल वट वृक्ष की दो शाखाएं– एक कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान तथा दूसरी कमला नेहरू तकनीकि संस्थान हो गयी। एक ज्ञान विज्ञान एवं कला की त्रिवेणी है तो दूसरा विज्ञान के व्यावहारिक रूप तकनीकि शिक्षा का केन्द्र है। वे दोनो संस्थान आज प्रदेश एवं देशभर से अपनी स्वतंत्र छवि और उपलब्धियों के लिए विख्यात है। यह महाविद्यालय समय समय पर अनेक परिवर्तनों के दृष्टि से गुजरा है परन्तु उसने अपने गरिमामयी परम्पराओं तथा ख्याति को सदैव अक्षुष्ण बनाए रखा है।

संस्थापक बाबू केदार नाथ सिंह जी द्वारा संस्थान में स्नातक स्तर पर चार संकायों कला, विज्ञान, शिक्षा, विधि, की कक्षाओं का शुभारंभ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म दिवस 02 अक्टूबर 1973 को किया गया। सूचना की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए संस्थान ने अत्याधुनिक उपकरणों से स्वयं को सुसज्जित किया है। राष्ट्र के प्रतिष्ठित विद्वानों को आमंत्रित कर हमने अपनी अध्यापन शैली और वस्तु विन्यास को निरन्तर परिष्कृत किया है। संस्थान ने अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता के उच्चतम मूल्यों को प्रमाणित करने के लिए **''राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद''**– **नैक** के मूल्यांकन में ''**ए ग्रेड**'' प्राप्त कर स्वयं की एक अद्वितीय प्रतिष्ठा स्थापित की है। संस्थान अपने छात्र–छात्राओं को केवल अध्ययन के क्षेत्र में ही सीमित रखने के वजाय उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए आधुनिक सुविधाओं को प्रदान करने के लिए भी कटिबद्ध है। संस्थान का उद्देश्य आगामी वर्षो में अनुसंधान करने की क्षमता को वैश्विक मानकों पर स्थापित करना भी है।

हिन्दी विभाग का परिचय

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान में स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग की स्थापना क्रमशः सन् 1973 एवं 1981 में हुई। डा0 ऊषा किशोर प्रथम विभागाध्यक्षा थीं, तब से लेकर आज तक हिन्दी विभाग अबाधगति से अपने उदात्त ध्येयों के साथ अग्रसर रहा है। छात्रों को हिन्दी साहित्य में निहित अमूल्य ज्ञान–विज्ञान से लाभान्वित करना और उनके व्यक्तित्व में निहित नैतिक, सामाजिक एवं मानवीय–मूल्यों की प्रतिष्ठा करना विभाग का अपना ध्येय रहा है। विभाग अपनी अकादमिक, साहित्यिक और रंगमंचीय गतिविधियों के लिए देश–विदेश भर में जाना जाता रहा है।

संगठनात्मक संरचना

श्री विनोद सिंह
संरक्षक एवं प्रबन्धक
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुलतानपुर

डा0 राधेश्याम सिंह
सहसंरक्षक एवं प्राचार्य
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुलतानपुर

डा0 सुशील कुमार सिंह
सहसंरक्षक एवं उपप्राचार्य
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुलतानपुर

श्री यशवंत सिंह
विशिष्ट संरक्षक एवं पूर्व प्राचार्य
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुलतानपुर

डा0 बी0पी0 सिंह
एसो0प्रोफेसर–अंग्रेजी विभाग
विशिष्ट संरक्षक एवं अध्यक्ष–
विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय
शिक्षक संघ–डा0 राम मनोहर
लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या

डा0 प्रतिमा सिंह
संयोजिका
विभागाध्यक्ष– हिन्दी विभाग
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुलतानपुर

डा0 पवन कुमार रावत
उप–संयोजक
असिस्टेंट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुलतानपुर

डा0 प्रिया श्रीवास्तव
उप–सचिव
असिस्टेंट प्रोफेसर– हिन्दी
विभाग
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुलतानपुर

संयोजन समिति

डा0 आर0पी0 सिंह एसो0प्रो0–रसायन विज्ञान विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**डा0 के0डी0 सिंह** एसो0प्रो0–वाणिज्य विभाग चीफ प्राक्टर के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**डा0 जयशंकर शुक्ल** एसो0प्रो0–वाणिज्य विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर
डा0 नीता सिंह एसो0प्रो0–शिक्षा संकाय के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**डॉ योगेंद्र बहादुर सिंह** एसो०प्रोफेसर–गणित विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**श्रीमती रंजना सिंह** एसो0प्रो0–राजनीति विज्ञान विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर
श्रीमती वन्दना सिंह एसो0प्रो0–संस्कृत विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**डा0 डी0के0 त्रिपाठी** एसो0प्रो0–भूगोल विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**डा0 आर0के0 पाण्डेय** एसो0प्रो0–जन्तुविज्ञान विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर
डा0 रामनयन सिंह एसो0प्रो0–जन्तु विज्ञान विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**डा0 प्रवीण कुमार सिंह** एसो0प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**डॉ सुनील प्रताप सिंह** एसो०प्रोफेसर– भौतिक विज्ञान विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर
तकनीकि समिति		
डा0 अवधेश कुमार दूबे असिस्टेट प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**श्री दीपचन्द्र बरनवाल** कंप्यूटर प्रभारी के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर	**श्री विवेक कुमार श्रीवास्तव** सिस्टम एडमिन के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुलतानपुर

आमंत्रित वक्ता

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'
अध्यक्ष–भारतीय नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम, नार्वे
सम्पादक –स्पाइल दर्पण
(द्विभाषिक द्वैमासिक पत्रिका ओस्लो से प्रकाशित)

प्रो0 सूरज बहादुर थापा
वरिष्ठ प्रोफेसर एवं आलोचक
हिन्दी तथा आधुनिक भाषा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो0 विजय बहादुर सिंह
पूर्व आचार्य इंस्टिट्यूट फॉर एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन भोपाल मध्य प्रदेश
पूर्व अध्यक्ष भारतीय भाषा परिषद कोलकाता

कार्यक्रम

09.45am	लागिन प्रारम्भ
10.00am–10.15am	स्वागत और परिचय
10.15am–10.45am	बीज वक्तव्य –डा0 आर0एस0 सिंह, प्राचार्य, के0एन0आई0पी0एस0एस0 सुलतानपुर
10.45am–11.30am	मुख्य वक्ता –श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल, अध्यक्ष– भारतीय नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम, नार्वे
11.30am–12.10pm	विशिष्ट वक्ता– प्रो0 सूरज बहादुर थापा, हिन्दी तथा आधुनिक भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
12.10am–12.50pm	अतिथि वक्ता – प्रो0 यशवन्त सिंह, पूर्व प्राचार्य के0एन0आई0 के0एन0आई0पी0एस0एस0 सुलतानपुर
12.50am–01.20pm	अध्यक्षीय उद्‌बोधन– प्रो0 विजय बहादुर सिंह, पूर्व आचार्य, इंस्टिट्यूट फॉर एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन भोपाल मध्य प्रदेश, पूर्व अध्यक्ष भारतीय भाषा परिषद कोलकाता
01.20am–01.30pm	धन्यवाद ज्ञापन – डा0 सुशील कुमार सिंह, उपप्राचार्य, के0एन0आई0पी0एस0एस0 सुलतानपुर